UNIT - II

Concept of Trusteeship

(A) Everything belongs to Society :-

सामाजिक स्तरीकरण (Social stratification) वह प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्तियों के समूहों को उनकी प्रतिष्ठा, संपत्ति और शक्ति की मात्रा के सापेक्ष पदानुक्रम में विभिन्न श्रेणियों में उच्च से निम्न रूप में स्तरीकृत किया जाता है। वर्ग स्तरीकरण विश्वव्यापी है और उसके उत्पन्न होने के अनेक कारण हैं जैसे पूंजीपति और श्रमिक वर्ग औद्योगीकरण की देन है, धन की विभिन्न अवस्था धनी, मध्यम और निर्धन वर्ग को जन्म देती है।

परिचय → समाजशास्त्र में सामाजिक स्तरीकरण का अध्ययन एक महत्त्वपूर्ण विषय है। समाज के विभिन्न स्वरूपों का अध्ययन करने से यह पता चलता है कि समाज में जिस प्रकार व्यक्ति एक-दूसरे से जुड़े होते हैं उसमें प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक अलग स्थान होता है। डॉक्टर, शिक्षक, व्यापारी, इंजीनियर, मजदूर, पुलिस, नर्स, पायलट, ड्राइवर। ये सभी किसी भी पेशे से जुड़े ऐसे व्यक्ति हैं जिनके पेशे अलग-अलग हैं और उन पेशों के कारण उनकी सामाजिक स्तर पर भिन्नता किसी भी समाज की एक विशिष्ट पहचान है। प्रत्येक समाज में

Page No.
Date

यह विभिन्नता पाई जाती है और समाजशास्त्रियों ने विभिन्न सामाजिक कार्यों से जुड़े व्यक्तियों का अध्ययन अपने विशिष्ट अवधारणाओं की मदद से किया जाता है। किसी व्यक्ति का ऊंचा व नीचा माना जाना उस समाज के प्रचलित नियमों के आधार पर होता है। सभी समाज के नियमों तो अलग - अलग होते हैं। जिन सैद्धान्तिक आधार को ध्यान में रखकर समाज-शास्त्र में सामाजिक स्वरुप का अध्ययन किया जाता है।

जहां तक सामाजिक स्तरीकरण का प्रश्न है इसे परिभाषित करते हुए बर्जर तथा बर्जर का मानना था कि सामाजिक स्तरीकरण से समाज में व्यक्ति को एक-दूसरे से भिन्न पहचान होती है जो सामाजिक वर्गीकरण के सिद्धांत पर उस समाज में टिका होता है। सामाजिक स्तरीकरण लोगों को श्रेणीबद्ध करने की प्रक्रिया है। व्यक्ति जिन विभिन्न श्रेणियों में बंटे होते हैं, उन्हें स्तर कहते हैं।

किंगस्ले डेविस ने कहा है कि जब हम जाति, वर्ग तथा सामाजिक स्तरीकरण की बात सोचते हैं तो हमारे मस्तिष्क में उन समूहों का ध्यान आता है जिसके सदस्य समाज में अपना एक स्थान रखते हैं उसके आधार पर उन्हें कुछ प्रतिष्ठा मिली होती है। इसके आधार पर एक समूह की स्थिति दूसरे समूह से वैधानिक दृष्टि से अलग मानी जाती है वह सामाजिक स्तरीकरण का आधार बन जाती है।

टाम बाटमोर का कहना था समाज में वर्ग तथा श्रेणी का बंटवार सत्ता और प्रतिष्ठा के आधार पर क्रमबद्ध स्वरुप किसी भी समाज

Page No.
Date

की सार्वभौमिक करण है जिसने सभी सामाजिक वैज्ञानिकों को प्रभावित किया है।

सामाजिक स्तरीकरण के मापदंड व आधार सभी समाज में अलग - अलग होते हैं परन्तु फिर भी यहाँ कुछ मापदंडों के आधार स्तरीकरण की प्रक्रिया को एक सार्वभौमिक अवधारणा के रूप में समझने की कोशिश की गयी है।

स्तरीकरण के संदर्भ में निम्न उपागम की चर्चा की जाती है →

(i) प्रतिष्ठात्मक उपागम।
(ii) आत्मनिष्ठ उपागम।
(iii) वस्तुनिष्ठ उपागम।

ब्रूम तथा सेल्जनिक ने उपर्युक्त लिखे तीनों उपागम के द्वारा स्तरीकरण को समझाया है। उनका यह मानना था कि स्तरीकरण का अध्ययन इन तीनों उपागम को एक विधि मानकर किया जा सकता है।

प्रतिष्ठात्मक उपागम में स्तरीकरण का अध्ययन करते हुए यह पूछा जा सकता है कि लोग आपको कैसे वर्गीकृत करते हैं? क्या मापदंड प्रयोग में लाते हैं? अपनी स्थिति का आकलन करने के लिए उन श्रेणी को वो कैसे देखते हैं और उन मापदंड को कैसे क्रमबद्ध करते हैं?

आत्मनिष्ठ उपागम में भी लोगों से यह पूछा जाता है कि वो अपने आपको दूसरे व्यक्ति या समूह की तुलना में स्वयं को या जिस समूह के हिस्से हैं उसे दूसरे के मुकाबले कैसे आकलन करते हैं। समाजशास्त्र में यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि आप किस वर्ग से संबंधित हैं?

Page No.
Date

वस्तुनिष्ठ उपागम में शोधकर्ता निरीक्षण के द्वारा वस्तुनिष्ठ तरीके से यह करने की कोशिश करता है कि उस व्यक्ति का क्या स्थान है।
वेबर ने भी तीन मापदंडों को महत्त्वपूर्ण मानते हुए उसे एक प्रमुख आधार मानकर समाज का स्तरीकरण किया —

(क) आर्थिक संपत्ति तथा आर्थिक लाभ के अवसर पर नियंत्रण।
(ख) राजनीतिक सत्ता के ऊपर नियंत्रण।
(ग) समाजिक स्थान व प्रतिष्ठा के ऊपर नियंत्रण।

जाति पर आधारित समाज की निम्न विशेषताएँ:→

(i) जाति में सदस्यता वंशानुक्रम पर निर्भर करता है। बचपन से ही जन्म के द्वारा उसे वह स्थान मिल जाता है।

(ii) इस प्रकार के विरासत में मिली सदस्यता निर्धारित तथा स्थायी होती है क्योंकि व्यक्ति चाहकर भी इसे छोड़ नहीं सकता।

(iv) यहाँ विवाह के लिए उसके पास अंतर्विवाही विकल्प के अलावा और कोई दूसरा विकल्प नहीं होता।

(v) खाने-पीने में उसकी पसंद सीमित होती है अर्थात् किसी और के हाथ का बना खाना, वह खा नहीं सकता।

(vi) जाति द्वारा उसे जो पहचान व नाम मिलता है उसे वह चाहकर भी नहीं बदल सकता।
(vii) जाति के लोग परंपरागत पेशे से बँधे होते हैं

(viii) प्रत्येक जाति की अपनी प्रतिष्ठा व सम्मान होती है जो उस जाति से स्थापित होती है।

(ix) जाति के आधार पर न केवल भोजन, बल्कि स्थान भी पवित्र तथा अपवित्र जैसी धारणा से जुड़े होते हैं। ब्राह्मण जाति में भी कई उप जाति होती हैं जिनकी सामाजिक स्थिति एक जैसी नहीं होती और इनके बीच विवाह भी सर्वथा वर्जित होता है।

जहाँ तक वर्ग और जाति पर आधारित सामाजिक स्तरीकरण का प्रश्न है – ऐसी मान्यता है कि जाति तथा वर्ग को लेकर जो पहले संकीर्ण दृष्टिकोण था, उसमे काफी बदलाव आया है।

के० एम० शर्मा का कहना है कि वर्ग पर आधारित अंतर जाति में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। गाँव मे रहने वाले लोग कभी-कभी भारतीय प्रतिनिधित्व संरचना का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इसलिए उनका मत था कि जाति और वर्ग को एक-दूसरे का विरोधी स्वरूप नहीं समझना चाहिए। ये दोनों भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अविभाज्य पहलू हैं और इन दोनो के बीच गहरा संबंध है जिसके निरंतरता और परिवर्तित स्वरूप का अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि सबकुछ समाज के अंतर्गत आता है। परस्पर सारी बातें आपस में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

Page No.
Date

(B) Man is Only a Caretaker :→ The possibility of taking care of an elderly parent is an increasingly ominous reality. Thought it is true that women find themselves more often in the role of actively helping a parent with dementia, cancer or some other illness, men are frequently involved in caregiving. There roles are not at all passive.

A caretaker is a person whose job it is to take care of a house or property when the owner is not there.

A caretaker government or leader is in charge temporarily until a new government or leader is appointed. The military intends to hand over power to a caretaker government.

A caretaker is someone who is responsible for looking after another person, for example, a person who has a disability or is ill or very young.

Social Welfare :→ A person who takes care of a vulnerable person, often a close relative.

The caretaker is a play in three acts by Harold Pinter. Although it was the

Page No.
Date

Sixth of ___ I call him a tramp but he was just a homeless old man who stayed three or four weeks.

(C) Our Responsibility to ensure Welfare of All

उद्देश्य:→ हमारा लक्ष्य एक जिम्मेदार नियोक्ता, मूल्यवान सहयोगी, अच्छा पड़ोसी और सम्मानित कॉरपोरेट नागरिक बनना है। हमारी नीति है कि हमारे सभी व्यवसायिक कार्य उद्योग के श्रेष्ठ मानकों के अनुसार संचालित हो और हम सदैव सामाजिक रूप से जिम्मेदार तरीके से व्यवहार करें। हम उन समुदायों में अपने आचरणों को नैतिक रूप से और सत्यनिष्ठा से करने का प्रयास करते हैं जहां हम काम करते है और साथ ही लिंग, रंग, नस्ल या पृष्ठ भूमि पर ध्यान दिए बगैर सभी विविधताओं वाले लोगों का सम्मान करते हैं। हम संबंधित कानूनों का पालन करके उपयुक्त अंतर्राष्ट्रीय मानकों को लागू करके व मूल्य आधारित प्रणाली स्थापित करके अपनी जिम्मेदारियां पूरी करते हैं।

हमारा मानना है कि "सफल होने के लिए कर्मचारियों, ग्राहकों, समाज और जिस दुनिया में हम रहते हैं उसके लिए कॉरपोरेट व्यवहार के उच्चतम मानक होना आवश्यक है।

इस विचार दृष्टि का गहरा संबंध हमारे सभी हित धारकों को लंबे समय तक बना रहने वाला और लाभकारी विकास देने की

Page No.
Date

हमारी प्रतिबद्धता से है। हम उन तरीकों से उद्योग के श्रेष्ठ मानकों के अनुसार अपना व्यवसाय चलाने का प्रयास करते हैं जो सुरक्षित पर्यावरण की दृष्टि से स्वीकार्य और स्थानीय समुदायों की जरूरतों और चिंताओं के प्रति संवेदनशील हो। Essel का मार्गदर्शन करने वाले प्रमुख सिद्धांत है। →

(i) हम उन देशों का सम्मान करते हैं जहाँ हम काम करते हैं
(ii) हम उन समुदायों को सहयोग और योगदान देते हैं जिनके बीच हम काम करते हैं।
(iii) हम अपने ऑपरेशनस के आस-पास पर्यावरण का ध्यान रखते हैं और उनकी देख-भाल करते हैं
(iv) हम व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेने के लिए अपने कर्मचारियों को सशक्त करते हैं और सहयोग देते हैं
(v) हम सभी कर्मचारियों और हित धारकों के साथ सकारात्मक संबंधों को महत्व देते हैं और इन्हें विकसित करते हैं।
(vi) हम अपनी गतिविधियों में पारदर्शी हैं

हम जिन समुदायों के बीच काम करते हैं, उनके साथ सहयोग में काम करके अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करते हुए, पूरी दुनिया में अच्छे नागरिक बनने की हम पूरी कोशिश करते हैं। हम उपयुक्त गैर-राजनीतिक और गैर-पृथकतावादी परियोजनाओं संगठनों व परोपकारी कामों को सहयोग देते हैं।

हम प्रबंधन निरंतर सुधार और हमारे प्रत्यक्ष व और अप्रत्यक्ष प्रभावों की सूचना देने के ऐसे

ऐसे कार्यक्रम के प्रति वचनबद्ध है जिससे उस दुनिया को बेहतर करने मे हमारे योगदान का उल्लेख होता है।

सामाजिक जिम्मेदारी की नीति पूरी दुनिया में संपूर्ण Essel में, समस्त निदेशकों और कर्मचारियों पर लागू होती है और इससे हमारी सभी गतिविधियों से हमारा दृष्टिकोण नियंत्रित होता है।

Importance of Service :→

(A) Responsibility of an Individual :→

जिम्मेदारी ही व्यक्ति को जिम्मेदार इंसान बनाती है, यह तय बात है लेकिन उसी को, जो अपनी जिम्मेदारी को घर परिवार, समाज देश से आगे दुनिया तक ले जाता है। अक्सर देखा जाता है कि लोग अपनी जिम्मेदारी को घर के भीतर एक कक्ष तक, अपनी निजी उपयोग की चीजों तक अपने स्वार्थों तक ही सीमित कर अपने मन, मस्तिष्क और जीवन को बहुत छोटा कर देते हैं, जो मानव होने पर ही प्रश्न चिह्न खड़ा करता है। व्यक्ति इतना सीमित हो गया है कि वह छोटी-छोटी बातों, छोटे-छोटे कामों को करने की जिम्मेदारी आपस मे एक-दूसरे पर डालता रहता है। ये प्रवचन मुनि विनय कुमार आलोक ने अणुव्रत भवन सेक्टर 24 में दिए। संभव का मार्ग असंभव की संकरी व घुटनभरी गलियों से होकर ही निकलता है।

व्यक्ति का धैर्य, लक्ष्य प्राप्ति की दृढ़ता, संघर्ष क्षमता या श्रम का सही दिशा में सही समायोजन ही संभव तक का सफर तय करने के मूलभूत उपकरण है।

किसी भी काम की जिम्मेदारी लेना, समझना और उसे पूरा करना सफलता की ओर पहला कदम है।

कुछ बच्चे जो अपना परिणाम अच्छा न आने या कम अंक आने का कारण अस्वस्थ होना, घर मे शादी या त्योहार या अपने अध्यापक गण को मानते रहे, जिन्दगी में ज्यादा आगे नही बढ़ पाए। इन्होंने अपने अवांछित परिणाम की जिम्मेदारी अपने ऊपर कभी नही ली।

इसके विपरीत छात्रो को परिणाम के अपेक्षा अनुसार न आने का कारण खुद मे ढूंढना चाहिए। जिसने भी सुधार लाने के प्रयास किए, जिन्दगी में बहुत आगे निकल गए।

किसी भी कार्य में हुई त्रुटि के लिए आप अपना बचाव करते रहेंगे, तो कभी भी उसे बेहतर नही कर पाएंगे। अपनी जिम्मेदारी पूर्ण रूप से अच्छे ढंग से निभाना ही आपको एक स्वतंत्र नागरिक बनाता है।

अपना उत्तरदायित्व समझने वाला व्यक्ति अपनी सारी ऊर्जा संचित कर कार्य करता है। यही सत्य है। पूर्ण जिम्मेदारी से कार्य करने वालों और अपनी गलतियां मानने वालों की लोग भी सहायता करते है।

हम सभी यदि अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सजग हो जाएं और पर्यावरण के संरक्षण को अपनी जिम्मेदारी समझें, हर कोई

Page No.
Date

स्वच्छता के प्रति प्रण ले, प्रत्येक व्यक्ति नैतिक मूल्यों को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाकर कार्य करे, कोई भी व्यक्ति दूसरे पर दोषारोपण से पहले अपने को जाँच ले तो हम बहुत सी मुश्किलों से बच सकते हैं।

अपने जीवन की जिम्मेदारी लेना आपको शक्ति, सफलता व मानसिक बल देगा। स्वाभिमान को भी बढ़ाएगा। यही सब आपको खुशियाँ देगा।

क्या अपनी परिस्थितियों, हालत के मारे हैं? क्या आप जीवन में बहुत कुछ आपके बस के बाहर है? यदि ऐसा है तो यह सोच छोड़ दें।

अपने जीवन को जिम्मेदारी से लेकर ~~चले~~ देखें। अपनी किस्मत को कोसने के बजाय जब आप गाड़ी का स्टीयरिंग खुद संभालेंगे तो गाड़ी मनचाही दिशा में जाएगी।

जिम्मेदारी लेने वाला ही सफल होता है। जो व्यक्ति अपनी जिन्दगी की जिम्मेदारी स्वयं लेता है, वही सफल होता है। बस इसी कथन से प्रेरित होकर मैंने अपनी जिम्मेदारियाँ स्वयं निभाने का प्रण लिया। अब जब भी हम कक्षा से बाहर जाते हैं या फिर छुट्टी के बाद मैं खुद सभी पंखे और लाइट बंद करके जाती हूँ। मैं यह अपनी जिम्मेदारी समझती हूँ। पानी भरने जाती हूँ तो इस बात का ध्यान रखती हूँ कि पानी का नल खुला न रहे। हमें विद्यार्थी होने के नाते इन सब चीजों का खास ध्यान रखना चाहिए ताकि हम विकास की ओर अग्रसर हों और अपनी जिम्मेदारियाँ स्वयं लेना सीखें। प्रगति के लिए जिम्मेदारी लेना जरूरी है।

हम सब वही हैं, जो हमारे विचार हैं या

Page No.
Date

हमारे कर्म हैं। यदि हम अपने जीवन में जिम्मेदारी नहीं लेते हैं तो हम प्रगति नहीं कर सकते। यदि हर व्यक्ति अपने जीवन से संबंधित अपने कार्य, खानपान, रहन सहन जीवनयापन, पर्यावरण व समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझ लें और उसे निभाएं तो निश्चय ही यह संसार एक सुखमय बन सकता है। हमारा जीवन उंगलियों के निशान नहीं जो बदले नहीं जा सकते। आवश्यकता है अपने जीवन में अपनी जिंदगी और जिम्मेदारी को समझने की। इससे हम अपना और अपने समाज का प्रारूप बदल सकते हैं।

हर काम जिम्मेदारी से करें

बाहर के देशों में लोग अपने बच्चों को पन्द्रह साल के होते ही घर से बाहर भेज देते हैं। वे खुद कमाते हैं और खुद ही अपना खर्चा उठाते हैं। अकेले कमाकर बच्चे जिंदगी के पहलुओं से वाकिफ होते हैं और जीना सीखते हैं। जब हम अपनी जिंदगी की जिम्मेदारी समझेंगे तभी हम देश की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठा सकेंगे।

आज के बच्चे ही कल का भविष्य हैं। जिम्मेदारी का मतलब छोटे से लेकर हर बड़ा काम अपनी जिम्मेदारी पर करें। हर गलती को अपने सिर लें। इससे यह होगा कि अगली बार वही काम करते समय वैसी गलती नहीं दोहराएंगे।

M.ED | MORAL EDUCATION | 2nd Semester

UNIT - I

Guiding principles for Life :→

Ethics :

(A) Guidelines set by Society :→
समाजकार्य एक व्यवसायिक सेवा है जिसके अंतर्गत समाज कार्य मे प्रशिक्षित कार्यकर्ता सेवार्थी की सहायता के लिए कार्य करता है वह इस दौरान अपने सेवार्थी को बेहतर सेवा प्रदान करने का प्रयास करता है। समाज कार्य व्यवसाय के कुछ आधारभूत सिद्धांत है जिनका पालन करना सामाजिक कार्यकर्ता के लिए आवश्यक माना जाता है।-

(i) संचार का सिद्धांत :→ आपस मे विचारो का आदान - प्रदान ही संचार है। जब कार्यकर्ता और सेवार्थी पहली बार मिलते है तो ही दोनो के बीच बात - चीत और विचार - विमर्श की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है और उनमे संचार प्रारंभ हो जाता है। यह संचार लिखित, अलिखित, मौखिक या सांकेतिक। इसके लिए कार्यकर्ता को चाहिए कि सेवार्थी की ही बोली या भाषा का प्रयोग करे जिससे संप्रेषण आसानी से सेवार्थी तक पहुंच सके। कार्यकर्ता को प्रभावी संचार के माध्यम से सेवार्थी के मानसिक कष्टो

Page No.
Date

का समाधान करना चाहिए।

(ii) वैयक्तिकरण का सिद्धांत :→ इसका तात्पर्य है सेवार्थी के विशिष्ट ज्ञान गुणो को ज्ञात करना और सिद्धांतो एवं प्रणालियों के प्रयोग द्वारा प्रत्येक सेवार्थी की अलग-२ तरीके से सहायता करना, जिससे वह अच्छी तरह से समायोजित हो सके। प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह अपनी रुचि के अनुसार विकास करे। कार्यकर्ता को यह स्वीकार करना होगा कि प्रत्येक व्यक्ति में कुछ ऐसी भी योग्यताएँ होती हैं कि जो दूसरो में नहीं पायी जाती।

(iii) स्वीकृति का सिद्धांत :→ इसका अर्थ यह है कि सेवार्थी जिस स्थिति में है उसे उसी स्थिति में स्वीकार किया जाए और उसे उसकी वर्तमान स्थिति के अनुसार उसके साथ उससे व्यवहार किया जाए और उसके संबंध में कोई राय बनाई जाए। कार्यकर्ता और सेवार्थी दोनो को एक-दूसरे को स्वीकृति प्रदान करनी चाहिए। कार्यकर्ता को सेवार्थी की नैतिक या अनैतिक किसी भी स्थिति का ध्यान रखे बिना उसे उसकी समस्या के समाधान में सहायता करनी चाहिए।

(iv) गोपनीयता का सिद्धांत :→ सेवार्थी की समस्याएं व्यक्तिगत होती हैं जिन्हे वह चाहता है कि गोपनीय रखा जाए इसलिए कार्यकर्ता को चाहिए कि सेवार्थी जो भी बात कार्यकर्ता से करे या कार्यकर्

को जो कुछ भी सेवार्थी के बारे में मालूम हो उसे कार्यकर्त्ता गोपनीय रखे। अगर ऐसी कोई बात आती है कि सेवार्थी समस्या का समाधान करने के लिए उसे किसी अन्य विशेषज्ञ से साझा करना आवश्यक है तो कार्यकर्त्ता को सेवार्थी के समक्ष यह स्पष्ट कर देना चाहिए अर्थात सेवार्थी की सहमति आवश्यक है। यदि सेवार्थी गोपनीयता के प्रति आश्वस्त नहीं होगा तो वह अपनी बातें रखने में भी संकोच करेगा।

(v) आत्मनिर्णय का सिद्धांत :→ इसे समाज कार्य का प्रमुख सिद्धांत माना जाता है। यह इस बात पर जोर देता है कि किसी भी व्यक्ति को अपने लिए सबसे उपयुक्त का चयन करने का अधिकार है। सेवार्थी को समस्या समाधान के प्रत्येक चरण में उसे आत्मनिर्णय का पूरा अधिकार होता है। इस संदर्भ में कार्यकर्त्ता को सेवार्थी की सहायता करनी चाहिए जिससे सेवार्थी उचित निर्णय ले सके। इससे सेवार्थी के आत्म सम्मान एवं आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होती है।

(vi) नियंत्रित संवेगात्मक संबंध का सिद्धांत :-

इसके अंतर्गत इस बात की सावधानी रखी जाती है कि कार्यकर्त्ता को सेवार्थी को देखकर उसके व्यक्तिगत या भावनात्मक लगाव नहीं रखना चाहिए। क्योंकि कार्यकर्त्ता को एक व्यवसायिक प्रक्रिया का पालन संबंध स्थापन के दौरान करना चाहिए। यहाँ कार्यकर्त्ता

को वस्तुनिष्ठ होने की आवश्यकता रहती है। सेवार्थी की समस्या के संदर्भ में व्यक्तिगत निर्णय नहीं लेना चाहिए। क्योंकि अधिक सहानुभूति कार्यकर्त्ता के आत्मनिर्णय और स्वतंत्रता में हस्तक्षेप कर सकती है। कार्यकर्त्ता को परानुभूति का उपयोग करते हुए अपने भावनाओं एवं संवेगों पर निर्णय करना चाहिए। तथा व्यावसायिक प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करना चाहिए।

(vii) अनिर्णयात्मक मनोवृत्ति का सिद्धांत :→ इसके तहत कार्यकर्त्ता के द्वारा सेवार्थी या उसकी समस्या को देखकर कोई भी निर्णय तुरंत नहीं लेना चाहिए, अपितु तब तक कोई किसी नतीजे पर तब तक नहीं पहुँचना चाहिए जब तक कि सेवार्थी की समस्या का सही ढंग से अध्ययन और निदान न कर लिया जाए। यह सिद्धांत कार्यकर्त्ता को सेवार्थी के बारे में कोई भी अतार्किक या अवैज्ञानिक निर्णय लेने से रोकता है।

- विकास के लक्ष्यों एवं मूल्यों का निर्धारण करना।
- परिस्थितियों का विश्लेषण करना।
- वर्तमान सेवाओं के गुणात्मक एवं परिमाणात्मक दृष्टि से पाई जाने वाली कमियों की जानकारी
- प्रशिक्षण तथा संचार प्रक्रिया की सीमाओं की जानकारी।
- आगत लक्ष्यों, क्षेत्रों, साधन आदि का निर्धारण
- क्रिया नियोजन तथा कार्यों का दस्तावेजीकरण करने के महत्व का ज्ञान होना।

(B) Changes According time and place :→

Morals and Ethics overlap but never coincide. And as we grow, as society develops we realize that we need to change our beliefs or else we will become extremist, radical etc, because CHANGE IS THE ONLY CONSTANT. If we do not change we stop growing and it will be the end of society as we know it. We are better than we were ten years ago, and we will be better ten years hence. We keep our morals and ethics in accordance to our society.

Morals and society shape each other.

Example :→ LGBT rights, inter caste marriages, Live in relationship, at point of time these things were anathema to our society but we are growing, we are changing our attitude towards them and we are becoming a better society.

Ethics or Morality are simply collections of values. They change with the constant changing values of individuals and collected individuals.

"value" or "meaning" is assigned by all of us individually from moment

Page No.
Date

to moment, day in and day out to every-thing nature presents us. The continous activity causes humanity's collected values to change or evolve over time.

Morality and Ethics are a technology we mutually adopt a set of behavious-al protocols which allow the community to function better. Communities have goals and opportunities and setting protocols is a good way of doing this.

Over time stuff changes what we regard as harm changes what we can do changes. These shifts require adjust-ments to the protocols.

Morality and Ethics are products of the particular historical space and time. It is devised to maintain a certain kind of power relationship and structure in specific time periods. For instance in the Antiquity, slavery was the norm and it was considered essential to render the master productive who required the slave to look into all the chores that would otherwise serves as an obstacle in the master's realization of his ultimate potential.

However in the Modern era slavery is seen as a deviation from the norm of liberty and equal moral worth that each human is born with

Page No.
Date

and is intrinsic to his existence.

MORALS

(C) Guidelines given by conscience :→

(i) समुदाय द्वारा श्रेष्ठ - लेखन के लिए स्वीकृत विधियों का दस्तावेजीकरण करते हैं। यह नीतियाँ इस बात का वर्णन करती हैं कि कैसे किसी नीतियाँ और दिशा निर्देश बनाए और संजोए रखने चाहिए।

(ii) समुदाय द्वारा विकसित किए गए हैं जो अच्छे लेख लिखने, नियमों को स्पष्ट करने, विवादों का निपटारा करने के लिए और एक मुक्त, विश्वसनीय ज्ञानकोश के निर्माण में काम आ सके

(iii) सम्पादन आरम्भ करने से पूर्व किसी भी नीति को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन पंचशील को पढ़ा जाना चाहिए जिसमें सर्वाधिक प्रासंगिक सिद्धांतों का एक सारांश दिया गया है।

(iv) इन नीतियों के कड़े पालन पर बल नहीं दिया जाता और दिशा निर्देशों से सम्बन्धित पृष्ठ इसके सिद्धांतों और श्रेष्ठ लेखन विधियों का वर्णन करते हैं।

(v) ये नीतियाँ उन मानकों का वर्णन करती हैं

जिनका सभी प्रयोक्ताओं द्वारा पालन किया जाना चाहिए, हालांकि हर बार सभी मानकों का पालन सम्भव नहीं भी हो सकता और इन नीतियों और दिशानिर्देशों को प्रयुक्त करते समय कृपया अपने विवेक से काम लें।

(D) <u>Morals Always Constant</u> :→ Morality is static does not change according to the standereds of modernization and development, the variable is the different concepts between the ages, maturation and civilizations and the sediments of different customs.

Morality is static, but sometimes it was aquired from the society in which the persons live.

Ethics is variable and not fixed according to the environment in which the individual lives and the circum-stances a person passes through.

Ethics are based on moral values, but these values may evolve considering newer standarts. For instance, slavery is not permitted these days and homosexuals are not jailed or killed because of their gender preference.

Morality is always constant and does not change with time or circumstances. The idea that morality

is a constant and measurable thing is a nonsense.

Morality shall be defined as the distinction between what action is right and what action is wrong, and constant shall be defined as a state that doesn't change.

Morality's Independence:

Morality is independent. We humans may have introduce morality but we don't update it when we realize that this action is actually immoral etc. It is US trying to figure out what is really right.

So, from that, we can come to the conclusion that morality is constant.

Ethics in the Workplace :⇒

(A) Respect for Each Other :⇒ एक-दूसरे की संस्कृति और परंपरा का सम्मान करना सीखने वाली ही वास्तविक शिक्षा है, साथ ही उन्होंने बालिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने की पुरजोर वकालत की। हमारे देश मे विभिन्न विषयो मे अनुसंधान एवं शोध कार्यो को बढ़ावा देने की जरुरत बताई।

हमारी विशेषता एक दूसरो की संस्कृति

Page No.
Date

और परम्पराओं को स्वीकार करने और अपने रीति - रिवाजो को आगे बढ़ाने की है और यही वास्तविक शिक्षा है, विभिन्न विषयो की शिक्षा कक्षा मे होती है लेकिन यह जीवन से जुड़ी शिक्षा है, ये सभी धर्म भाईचारा, अहिंसा, सच्चाई और एक दूसरे के लिए करुणा का पाठ पढ़ाते है और शिक्षा का उद्देश्य अच्छा मनुष्य बनना होना चाहिए।

अतः हमारा देश विविधता से भरा देश है और यहाँ विविधता मे भी एकता है देश मे 'असहिष्णुता' को लेकर हो रही बहस के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को लोगों से एक दूसरे की संस्कृति और विचारों का सम्मान करने की अपील की है। हमारा देश विविधता से भरा हुआ देश है यहाँ विविधता मे भी एकता है। इस विविधता का हमे सम्मान करना चाहिए। संस्कृति और समाज विविधता कक्षा मे प्रतिबिंबित होती है। अच्छे नागरिक वे होते है जो वास्तव मे वे है, के साथ सहजता अनुभव करते है। उनमे आत्म-सम्मान होता है, वे अपनी ताकतों और कमजोरियों को जानते है और उनमे पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना अन्य लोगो के साथ सकारात्मक संबंध बनाने की क्षमता होती है। वे खुद का सम्मान करते है और साथ ही दूसरो का भी सम्मान करते है। एक अध्यापक के रूप मे आप किसी युवा व्यक्ति के आत्म - सम्मान पर उल्लेखनीय प्रभाव डाल सकते है, अपनी उस शक्ति को जाने और इसका ~~शक्ति~~ उपयोग हर छात्र के आत्म - सम्मान को बढ़ाने के लिए करे।

Page No.
Date

(B) Obedience to the Organization :→

कुछ वक्त पहले देश के एक बड़े शिक्षा संस्थान की निदेशक परिषद ने कोई एक साल पहले पाठ्यक्रम में की गई बड़ी और महत्वकांक्षी तब्दीली को खारिज करते हुए पुराने पाठ्यक्रम को वापस बहाल करने का फैसला किया यह वही परिषद थी जिसने पहले के पाठ्यक्रम की आलोचना को दरकिनार करते हुए पिछला परिवर्तन किया था उस वक्त इस निर्णय की आलोचना करने वाले अध्यापकों से राजनीतिक और शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने प्रश्न किया था; यह निर्णय अत्यन्त शिक्षित, अपने ज्ञान क्षेत्रों में सुपरिचित विद्वानों ने सुचिंतित ढंग से किया क्यों किया जब आप इसे अकादमिक दृष्टि से कमजोर बताते हैं? एक तरह से विश्वविद्यालय के अकादमिक समुदाय ने स्वेच्छा से यह फैसला किया लेकिन भिन्न परिस्थिति में इसी निर्णय को इसी परिषद ने फिर उतने ही निर्द्वन्द भाव से कैसे रद कर दिया?

आज्ञाकारिता एक ऐसा गुण या अवगुण है, जो संस्कृतियों, जेंडर और शिक्षा के स्तर से परे, मानवीय समाज में आमतौर पर पाया जाता है, कुछ की समझ है कि जापान या चीन अथवा कोरिया, जहां बौद्ध धर्म का प्रभुत्व है या कंफ्युशियस-मत प्रभावशाली है, अधिक आज्ञाकारी समाज है, लेकिन मिलग्राम ने साबित किया कि अमरीकी इस मामले में भिन्न नहीं है क्या हम भारतीय अलग है?

Page No.
Date

बचपन से ही बड़ों की आज्ञा मानने के लिए शिक्षित किए जाने वाले समाज से बाद में आज्ञा के औचित्य पर विचार की अपेक्षा करना शायद ज्यादती है, आज्ञा कई मर्तबा सीधे दी भी नहीं जाती, ऐसा भ्रम होता है कि यह वस्तुतः हमारा अपना निर्णय है, ~~आज्ञाकारिता~~ आज्ञाकारिता का अर्थ चुनाव की स्वतंत्रता का अभाव नहीं है यह प्राय स्वैच्छिक है। आज्ञा मानने पर पुरस्कार की आशा और न मानने पर नुकसान की आशंका भी सहज ही है।

मनोवैज्ञानिक थोसेफ ब्रौड़ी के अनुसार आज की उपभोक्तावादी संस्कृति के लिए आज्ञाकारिता अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक है, इसलिए बाजार एक ऐसा इंसानी दिमाग चाहता है जो विज्ञापनों की आज्ञा मानता रहे, बावजूद उन चेतावनियों की इस जीवन पद्धति का अर्थ है, सामूहिक और अनिवार्य विनाश यह मिलग्राम के प्रयोग की तरह ही है जहाँ चेतावनी के बावजूद लोगों ने बिजली के झटके देना जारी रखा।

जो यह मानते हैं कि सेना का काम आज्ञाकारिता बिना नहीं चलता, वे ऊपर के उदाहरणों के कारण इस पर विचार करना चाहेंगे कि क्या सामान्य तौर पर समाज का या सत्ता का काम आज्ञाकारिता के बिना चलता है?

प्रत्येक सत्ता आज्ञाकारिता चाहती है लेकिन उसकी निरंकुशता के स्तर का पता हम इस बात से लगा सकते हैं कि कब हम आज्ञा के स्वरूप पर विचार करने में खुद को असमर्थ

पाने लगते हैं और सजग समाज वह जो असमर्थता के अंतिम बिंदु तक लुढ़क न जाए क्या इसके लिए आज्ञाकारिता - सूचकांक जैसी किसी चीज की कल्पना की जा सकती है?

(C) Dignity of Labour :→ (श्रम की गरिमा)

श्रम की गरिमा यह दर्शन है कि सभी प्रकार की नौकरियों को सम्मान रूप से सम्मान दिया जाता है, और किसी भी व्यवसाय को श्रेष्ठ नहीं माना जाता है और किसी भी नौकरी में किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। यद्यपि उसकी आजीविका के लिए किसी व्यक्ति के कब्जे में शारीरिक श्रम या मानसिक श्रम शामिल है, लेकिन यह माना जाता है कि नौकरी में शरीर की तुलना में अधिक बुद्धि शामिल है जो नौकरी की तुलना में गरिमा रखता है। समाज सुधारक जैसे बसवा और उनके समकालीन शरणास, साथ ही साथ महात्मा गांधी, श्रम की गरिमा के प्रमुख पैरोकार थे।

श्रम की गरिमा ईसाई नैतिकता में प्रमुख विषयों में से एक है और इस तरह यह कैथोलिक सामाजिक शिक्षण में, कैथोलिक सामाजिक शिक्षा, मेथोडिस्ट सिद्धांतों में और सुधार धर्मशास्त्र में माना जाता है। रोमन कैथोलिक धर्म में आमतौर पर "काम की गरिमा और श्रमिकों के अधिकार" शीर्षक, मानव श्रम की गरिमा की पुष्टि कई पापल विश्वकोषों में पाई जाती है, विशेष रूप से पोप जॉन पॉल द्वितीय के श्रमों। सरल रूप में किसी भी प्रकार की नौकरी का सम्मान करना "श्रम की गरिमा" कहलाता है। मनुष्य के पास श्रम के अतिरिक्त कोई वास्तविक

मनुष्य सम्पति नहीं है। यदि यह कहा जाय कि श्रम ही जीवन है तो यह गलत न होगा। जीवन में श्रम अनिवार्य है। गीता में श्रीकृष्ण ने कर्म करने पर बल दिया है मानव देह मिली है तो कर्म करना ही पड़ेगा। श्रम न करने से जीवन नरक बनता है और कर्म करने से स्वर्ग।

ईमानदारी से श्रम करने से मानव फरिश्ता कहलाता है और श्रम न करने से शैतान। जैसा कि कहा भी गया है खाली दिमाग शैतान का घर होता है। श्रम दो प्रकार का होता है — शारीरिक तथा मानसिक। किसी वस्तु, अर्थ (धन) अथवा उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किए गए प्रयत्न का नाम श्रम है।

श्रम अपने आप में ही एक लक्ष्य है। श्रम करके चित्त प्रसन्न होता है। देह तंदरुस्त रहती है। व्यक्ति उन्नति करे अथवा न करे ~~परिवार अथवा~~ समाज में सम्मान मिलता है। किन्तु यह होता नहीं है कि व्यक्ति श्रम करे और वह उन्नति न करे। श्रम करने वाला व्यक्ति सदैव उन्नति करता है।

जीवन में श्रम का विशेष महत्त्व है। मेहनत वह सुनहरी कुंजी है जो भाग्य के बंद कपाट खोल देती है। परिश्रम ही जीवन की सफलता का रहस्य है। परिश्रम का अर्थ है — 'उद्यम' अथवा 'मेहनत'। परिश्रम वह माध्यम है जो मनुष्य को मनोरथ की मंजिल तक पहुँचाता है। श्रम के मुख्य दो भेद होते हैं — मानसिक श्रम और शारीरिक श्रम। मनन, चिंतन, अध्ययन मानसिक श्रम है। शरीर के द्वारा किए जाने वाले कर्म को शारीरिक श्रम कहते हैं। जीवन में मानसिक और शारीरिक श्रम दोनों का अपना महत्त्व है।

मानव जीवन में परिश्रम की महिमा असीम है। यह राजा को रंक और दुर्बल को सबल बना देती है। परिश्रमी व्यक्ति अपना

भाग्य-विधाता और समाज का निर्माता होता है। जिस देश के लोग परिश्रमी होते हैं, वह राष्ट्र इतनी अधिक उन्नति करता है। चीन, जापान अमेरिका आदि इसके उदाहरण है।

प्रकृति भी हमें परिश्रम करने की प्रेरणा देती है। चींटियां और मधुमक्खियां प्रकृति की प्रेरणा स्रोत हैं। आलस्य मनुष्य का वह बड़ा शत्रु है। श्रम ही जीवन है वही मनुष्य का सच्चा मित्र है, इसलिए कहा जाता है "श्रममेव जयते"।

(D) <u>Excellence In Action</u> :→ एडवांस सीटीई की वार्षिक उत्कृष्टता अवार्ड राष्ट्र भर मे अध्ययन के बेहतर कैरियर तकनीकी शिक्षा (सीटीई) कार्यक्रमों को मान्यता देती है। और सम्मानित करती है। अध्ययन के चयनित कार्यक्रम कैरियर कलस्टर्स के क्रियान्वयन मे उत्कृष्टता की मिसाल कायम करेंगे। माध्यमिक से लेकर स्नातकोत्तर शिक्षा तक एक सच्ची प्रगति दिखाएंगे। सार्थक कार्य आधारित सीखने के अवसर प्रदान करेंगे और छात्र उपलब्धि और सफलता पर पर्याप्त और साक्ष्य-आधारित प्रभाव डालेंगे।

यूसीएलए के पूर्व छात्र सभी उद्योगों मे स्थायी प्रभाव और प्रभाव पैदा करने वाले नेता, नवोन्मेषक और परिवर्तन करने वाले हैं। छात्र द्वारा आयोजित साक्षात्कार के माध्यम से यह पूर्व छात्र स्पॉटलाइट श्रृंखला प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों के कैरियर मे अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। और यूसीएलए समुदाय के लिए उनके समर्पण को उजागर करता है।

"एक्सीलेंस इन एक्शन को रेजिमेंटो के सभी पलक और व्यवसायिकता के साथ संपादित, डिजाइन

"एक्सीलेंस इन एक्शन उतना ही अच्छा है जितना इसका शब्द ..... यह एक अनोखी संस्था का विश्लेषण है, जो दिलचस्प और कुशल दोनों तरह से लिखी गई है ... एक्सीलेंस इन एक्शन- लेकिन उत्पादन में उत्कृष्टता भी।" मेजर - जनरल सर एवलिन वेब कार्टर, कंट्री लाइफ, जून 2001

"एक्शन में उत्कृष्टता एक शानदार, असाधारण रूप से सफल पुस्तक, एक वास्तविक जीत है और इसे बहुत अधिक अनुशंसित नहीं किया जा सकता है।"

"एक्शन में उत्कृष्टता 2017 - 2018" :→

नौ मील फॉल्स स्कूल जिले का उपलब्धियों, विशेष घटनाओं और छात्र उपलब्धियों के माध्यम से प्रत्येक बच्चे की सफलता के लिए प्रदान करना शैक्षिक उत्कृष्टता।

एक्सीलेंस इन एक्शन प्रोग्राम को पहचानने और पुरस्कृत करने का प्रयास है। उन व्यक्तियों या टीमों को जिन्हें ई-मेल या हाइलाइट किया गया है। प्रशासन द्वारा प्राप्त प्रशंसा पत्र।

...****....